thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853115
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

आर्य प्रतिनिधि

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 11 अंक : 11 रोहतक, 14 अगस्त, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

आत्मा की नित्यता

❑ महात्मा चैतन्यमुनि

वेद, उपनिषद् तथा गीता आदि अनेक ग्रन्थों में आत्मा को अनादि तत्त्व एवं नित्य माना है। ऋग्वेद (6/9/4) के अनुसार यह ज्ञान ग्रहण करने वाला आत्मा मरणशील मनुष्यों में अमर ज्योति है, यह शरीर के अन्दर रहने वाला आत्मा नित्य और अमर है....इसी वेद में (1/164/30) यह भी कहा गया है कि वह जीव धारण करने वाला है और स्थिर अति वेग से इन्द्रियों में गति उत्पन्न करता हुआ, शरीर को संचालित करता हुआ, शरीर रूप गृह के अन्दर प्राण देता हुआ, चेतना रूप होकर व्याप रहा है। वह जीवात्मा मरने वाले जड़ देह के बीच में अपनी धारक शक्तियों या अन्नों द्वारा विचरता है। वह स्वयं अमर होकर मरने वाले शरीर के साथ एक ही आश्रम में रहता है। अन्यत्र (ऋ० 10/177/3) कहा गया है—जीवात्मा का कभी पतन नहीं होता, वह कभी समीप और कभी दूर नाना मार्गों में भ्रमण करता है। वह कदाचित् अनेक वस्त्र एक साथ ही पहनता है और कभी पृथक्-पृथक् पहनता है, इस प्रकार वह संसार में बार-बार आता-जाता रहता है। यजुर्वेद में आत्मा की अमरता के बारे में कहा गया है—**वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्....** (40/15) अर्थात् यह शरीर तो भस्म होने वाला अर्थात् मृत्यु को प्राप्त होने वाला है मगर आत्मा अमृत है। अथर्ववेद में जीवात्मा की अमरता के बारे में कहा गया है—

इयं कल्याण्यजरा मर्त्यस्यामृता गृहे। यस्मै कृता शये स यश्चकार जजार सः॥ (अथर्व० 10/8/26)

यह आत्मा कल्याणी अजर अमर होकर मरणधर्मी मनुष्य के घर में है....वह स्तुति करने योग्य तथा प्रकृतिस्थ ईश्वर की आज्ञा मानने के लिए सिद्ध की गई है...अथर्ववेद 9/10/16 के अनुसार जीवात्मा अमर है, वह शरीर के साथ सम्बद्ध होकर अनेक जन्म ग्रहण करता है।

वेदान्त दर्शन का कथन (2/2/42) है—**उत्पत्त्यसम्भावत्।** अर्थात् उत्पत्ति के संभव न होने से जीवात्मा को किसी तत्त्व का परिणाम कहना युक्त नहीं। इसी ग्रन्थ में कहा गया है—**चराचरव्यपाश्रयस्तु तद्व्यपदशो भाक्तस्तद्भाव-भावित्वात्।** (2/3/16) अर्थात् चर और अचर दो प्रकार के देह जीवात्मा के देखे जाते हैं। जन्म-मरण का आश्रय केवल ये देह होते हैं तथा इनके जन्म-मरण मुख्य हैं। आत्मा में जन्म-मरण का व्यपदेश-कथन भाक्त है, गौण है।

चराचर भूतों में जो जन्म-मरण का व्यवहार देखा जाता है वह जीव के सम्बन्ध में मुख्य नहीं, किन्तु गौण है। अमुक मर गया और अमुक उत्पन्न हो गया, यह भाक्त अर्थात् उपचार की भाषा है, क्योंकि शरीर के साथ होने से शरीर का भाव आत्मा में भी आ जाता है और जो भाषा शरीर के सम्बन्ध में रखती है उसी का प्रयोग आत्मा के लिए भी करना पड़ता है। आगे कहा है—**नात्माऽश्रु तेर्नित्यवाच्च ताभ्यः।** (2/3/17) 'आत्मा मरता या उत्पन्न नहीं होता, क्योंकि कोई श्रुति ऐसा नहीं बताती....।' न्यायदर्शन (4/1/10) के अनुसार—**आत्मनित्यत्वे प्रेत्यभाव-सिद्धिः।** अर्थात् पुनर्जन्म की सिद्धि से आत्मा का नित्यत्व सिद्ध है। इसी क्रम में आगे कहा गया है—**प्रत्यभावः पुनरुत्पत्तिः।** (1/19)। अर्थात् जो उत्पन्न होता है, वह मरता है और जो मरता है वह फिर दूसरे शरीर को धारण करता है अर्थात् उसका पुनर्जन्म होता है। इस प्रकार मरकर पुनर्जन्म लेने को दार्शनिक भाषा में 'प्रेत्यभाव' कहते हैं। सांख्य दर्शन के अनुसार—**शरीरादिव्यतिरिक्तः पुमान्।** (1/104) अर्थात् आत्मा शरीर आदि से भिन्न है। आगे कहा है—**देहादि व्यतिरिक्तोऽसौ वैचित्र्यात्।** (6/2) अर्थात् विलक्षण होने से वह आत्मा देहादि से भिन्न है क्योंकि देह आदि समस्त पदार्थ परिणामी, जड़ एवं नश्वर है परन्तु आत्मा अपरिणामी चेतन एवं नित्य रहता है। देहादि पदार्थ भोग्य या भोग के साधन है। मगर आत्मा भोक्ता रहता है। इसी क्रम में आगे कहा गया है—**षष्ठीव्यपदेशादपि।** (6/3) अर्थात् छठी विभक्ति के व्यवहार से भी आत्मा देहादि से अलग है क्योंकि 'मैं देह हूँ' या 'मैं बुद्धि हूँ' ऐसा कोई नहीं कहता बल्कि ऐसा कहा जाता है कि 'यह मेरा शरीर है' या 'यह मेरी बुद्धि है'। देह की रचना का कारण भी यह चेतन आत्मा ही है—**अनधिष्ठितस्य पूति-भावप्रसंगात्न तत्सिद्धिः।** (6/60) अर्थात् पुरुष से अनधिष्ठित देह के सड़ जाने या बिगड़ जाने की स्थिति से आत्मा से अधिष्ठित देह की रचना संभव नहीं। आत्मा के नित्य होने के बारे में कहा गया है—**उपाधि-भेदेऽप्येकस्य नानायोग आकाश-स्येव घटादिभिः।** (1/115), **उपाधि-र्भिद्यते न तु तद्वान्।** (1/116) अर्थात् देह का नाश हो जाने पर भी एक आत्मा का अनेक देहों के साथ सम्बन्ध होता है, जैसे आकाश का घटादि के साथ तथा देह नष्ट हो जाता है मगर देही आत्मा नहीं। इसी आधार पर जन्म-मरणादि की व्यवस्था मानी जा सकती है। कठोपनिषद् में कहा गया है—

न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥ (2/18)

अर्थात् न वह (आत्मा) उत्पन्न होता है, न मरता है। न वह किसी वस्तु का परिवर्तित रूप है और न उसे बदलकर कोई और वस्तु बन जाती है। वह अजन्मा है, नित्य है, सदा रहने वाला और पुराना है, शरीर के नाश होने पर उसका नाश नहीं होता। छान्दोग्य उपनिषद् (6/11/3) में भी कहा गया है—**जीवापेतं वाव किलेदं म्रियते न जीवो म्रियत इति...।** जीव नहीं मरता। जब जीव शरीर से निकल जाता है तो यह शरीर मर जाता है। बृहदारण्यक उपनिषद् में (4/5/14) महामना याज्ञवल्क्य जी मैत्रेय से कहते हैं—'अरे मैं व्यर्थ बात नहीं कहता। यह आत्मा अविनाशी है। उसका खण्डन नहीं हो सकता।' आत्मा की नित्यता के बारे में इसी उपनिषद् में बहुत ही सुन्दर प्रसंग आता है—जब याज्ञवल्क्य जी सभी विद्वानों के प्रश्नों का उत्तर दे देते हैं तो वे स्वयं ही वहां बैठे विद्वानों से पूछते हैं कि यदि वृक्ष के मूल को ही नष्ट कर दिया जाये तो वह फिर उत्पन्न नहीं हो सकता, फिर यह बतलाओ कि मृत्यु जब पुरुष को समूल नष्ट कर देती है तो यह फिर किस मूल से उठ खड़ा होता है? जब विद्वानों से इसका उत्तर देते नहीं बना तो वे स्वयं ही इसका उत्तर देते हुए कहते हैं (बृह०उप० 3/9/28) कि हे विद्वानो! यह आत्मा 'जात' ही है, सदा बना हुआ है, वह कभी उत्पन्न ही नहीं होता, फिर उसके दुबारा उत्पन्न होने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। उनके कथन का भाव है कि यह आत्मा न कभी जन्म लेता है और न ही कभी मृत्यु को प्राप्त होता है, जन्म और मरण केवल शरीर का धर्म है। आत्मा तो अपने कर्मों के अनुसार इन शरीरों में आता-जाता रहता है।

गीताकार ने दूसरे अध्याय में आत्मा की अमरता का विशद् विवेचन करते हुए कहा है—

अविनाशी तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्। विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्त्तुमर्हसि॥ अव्यक्तोऽय-

शेष पृष्ठ 2 पर....

thearyasamaj.org

आत्मा की नित्यता..... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

मचिन्तयोऽयमविकार्योऽयमुच्यते।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि॥
(गी० 2/17 से 25)

जिस आत्म-सत्ता से हमारा यह सारा शरीर व्याप्त है, वह आत्मा अविनाशी है। इस अव्यय आत्म-सत्ता का कोई भी विनाश नहीं कर सकता। यह देह 'शरीर' है, वह आत्मा 'शरीरी' है, इसलिए 'शरीरी' है, क्योंकि यह शरीर उसका है। उस नित्य 'शरीरी' के, आत्मा के, ये देह तो अन्त वाले हैं, नष्ट हो जाने वाले हैं, परन्तु वह आत्मा स्वयं अविनाशी है, अज्ञेय है। आत्मा के विषय में जो यह समझता है कि यह मारता है या जो यह समझता है कि यह मारा जाता है, वे दोनों ही सत्य बात को नहीं जानते हैं, क्योंकि यह आत्मा न तो मारता है, न मारा जाता है। यह आत्मा न कभी उत्पन्न होता है, न कभी मरता है। ऐसा भी नहीं है कि एक बार जब यह अस्तित्व में आ गया तब फिर दोबारा होने का नहीं। यह अजन्मा है, नित्य है, शाश्वत है, पुरातन है। शरीर के वध हो जाने पर भी यह मरता नहीं है। हे पार्थ! जो यह जान जाता है कि आत्मा अविनाशी है, नित्य है, जो इस आत्मा को अजन्मा और अपरिवर्तनशील जान जाता है, वह पुरुष कैसे किसी को दूसरे से मरवा सकता है या स्वयं मार सकता है? जैसे मनुष्य फटे-पुराने वस्त्रों को छोड़कर दूसरे नए वस्त्र पहन लेता है, वैसे ही यह देही, जीवात्मा, पुराने तथा जीर्ण-शीर्ण शरीरों को छोड़कर नए शरीरों को प्राप्त करता है, धारण कर लेता है। इस आत्मा को शस्त्र छेद नहीं सकते, न इसको अग्नि जला सकती है और न इसे पानी गीला कर सकता है, न वायु इसे सुखा सकता है। इस आत्मा को छेदा नहीं जा सकता, जलाया नहीं जा सकता, गीला नहीं किया जा सकता, सुखाया नहीं जा सकता। यह नित्य है, सबके अन्दर व्याप्त है, स्थिर है, अचल है, सनातन है। हे अर्जुन! यह आत्मा 'अव्यक्त' है—इन्द्रियों से ग्रहण करने का विषय नहीं है। 'अचिन्त्य' है—मन से ग्रहण करने का विषय भी नहीं है। 'अविकार्य' उसे सर्वथा विकार रहित कहा जाता है। इसलिए उसे ऐसा समझकर तुझे शोक नहीं करना चाहिए। महाभारत में कहा गया है—

न जीवनाशोऽस्ति हि देहभेदे,
मिथ्यैतदाहुर्मत इत्यबुद्धाः।
जीवस्तु देहान्तरितः प्रयाति,
दशार्धतैवास्य शरीरभेदः॥
(शान्तिपर्व 187/2)

अर्थात् अज्ञानियों का ऐसा कहना कि वह मर गया, मिथ्या है, क्योंकि शरीरपात होने पर जीवात्मा का नाश नहीं होता है। जीवात्मा तो दूसरे शरीर में स्थानान्तरित हो जाता है। इसके शरीर का पात तो पंचतत्त्वों का अपने-अपने कारण में मिल जाना है। इस सम्बन्ध में महर्षि चरक जी ने बहुत ही सुन्दर उपमा देते हुए कहा है—

न शरीराश्रितो जीवस्तस्मिन्नष्टे प्रणश्यति।
समिधामिव दग्धानां, यथाग्निर्दृश्यते तथा॥
समिधामुपयोगान्ते यथाग्निपलभ्यते।
आकाशानुगतत्त्वाद्धि, दुर्ग्राह्यो हि निराश्रयः॥
तथा शरीरसंत्यागे, जीवो ह्याकाशवत् स्थितः।
न गृह्यते तु सूक्ष्मत्वाद्, यथा ज्योतिर्न संशयः॥
(चरक सू० 30/15)

अर्थात् शरीर में रहने वाला जीवात्मा शरीर के नष्ट हो जाने पर भी नष्ट नहीं होता, अपितु वैसे ही वर्तमान रहता है। जैसे समिधाओं के पूर्णतया जल जाने पर अग्नि वर्तमान रहता है, इसलिए दृष्टिगत नहीं होता, क्योंकि आकाशवत् सूक्ष्म होने के कारण वह तत्त्व आश्रयरहित हो जाने से ग्रहण करने योग्य नहीं रहता, वैसे ही शरीर को त्याग देने के बाद जीवात्मा भी आकाश के समान वर्तमान रहता है किन्तु वह सूक्ष्म होने के कारण चक्षु आदि के द्वारा ज्योति के समान ग्रहण नहीं किया जा सकता।

महर्षि दयानन्द जी ने वेद के आधार पर प्रकृति, जीव और परमात्मा इन तीन अनादि सत्ताओं का विवेचन किया है। यहाँ पर हम 'श्रीमद्दयानन्द प्रकाश' (संगठन काण्ड-दसवां सर्ग) के उस प्रसंग को देना उपयुक्त समझते हैं जब महर्षि जी ने अपने प्रवचन में ईसाइयों की आलोचना की। अगले दिन कमिश्नर महोदय ने लाला लक्ष्मीनारायण को बुलाकर कहा, 'आप पण्डित महाशय' (महर्षि दयानन्द) को कह दीजिए कि अधिक कठोर खण्डन से काम न लिया करें। हम ईसाई लोग तो सभ्य और सुशिक्षित हैं। वाद-प्रतिवाद में नहीं घबराते। परन्तु यदि हिन्दू-मुसलमान उत्तेजित हो गये तो उनके व्याख्यान बन्द हो जायेंगे। लाला जी ने यह बात महर्षि तक पहुंचा दी। अगले दिन व्याख्यान आत्मा के स्वरूप पर था। ....महाराज ने व्याख्यान में आत्मा के गुणों का वर्णन करते हुए सत्य पर कहना आरम्भ कर दिया। उन्होंने गम्भीर गर्जना से कहा, लोग कहते हैं कि सत्य का प्रकाश न कीजिए क्योंकि कलेक्टर कुपित हो जायेगा, कमिश्नर प्रसन्न नहीं रहेगा, गवर्नर पीड़ा पहुँचाएगा। अजी! चाहे चक्रवर्ती राजा भी अप्रसन्न क्यों न हो जाए, हम तो सत्य ही कहेंगे। ....आत्मा सत्य है। उसकी सत्ता को न कोई शस्त्र छेदन कर सकता है और न अग्नि जला सकती है। वह एक अजर-अमर और अविनाशी पदार्थ है। शरीर तो अवश्यमेव नाशवान् है, जितना जी चाहे इसका नाश कर दे परन्तु हम देश की रक्षा के लिए सनातन धर्म को नहीं त्यागेंगे। सत्य को नहीं छोड़ेंगे....वह शूरवीर पुरुष मुझे दिखाइए, जो मेरे अन्तरात्मा को छिन्न-भिन्न करने का घमण्ड करता हो....।

संपर्क-महादेव, सुन्दरनगर-174401 (हि.प्र.)

15 अगस्त स्वतन्त्रता दिवस पर विशेष....

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा, हम बुलबुले हैं इसकी, यह गुलस्तां हमारा।

❑ कृष्ण वोहरा, सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, 641, जेल ग्राउण्ड, सिरसा

हम भारतवासी 15 अगस्त को अपना 67वाँ स्वतन्त्रता दिवस मना रहे हैं। दासता की जंजीरों को तोड़कर हम 15 अगस्त 1947 ई० को स्वतन्त्र हुए। आज हम प्रणाम करते हैं उन शहीदों को जिन्होंने मादरे वतन की आजादी के लिए अपने बलिदान दिए। स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू बने। उनके शासन काल में यह देश उन्नति की ओर अग्रसर हुआ। देखते ही देखते विश्व में एक शक्तिशाली देश बन गया। द्वितीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के कार्यकाल में देश में अनेक उद्योग स्थापित हुए। इसी प्रकार श्रीमती इन्दिरा गांधी, राजीव गांधी, श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं डॉ. मनमोहन सिंह के कार्यकाल में भी भारत निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर हुआ।

यह हमारा सौभाग्य है कि विश्व में सबसे बड़ा लोकतंत्र देश भारत का भविष्य उज्ज्वल है। 16वीं लोकसभा का गठन हो चुका है। 26 मई को राष्ट्रपति भवन के प्रांगण में हुए एक विशेष समारोह में नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई गई। अन्य मंत्रियों को भी शपथ दिलाई गई। शपथ ग्रहण समारोह में दक्षेस देशों के प्रमुख भी शामिल हुए। इस बार लालकिले की प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ही राष्ट्र को सम्बोधित करेंगे। भारत विश्व का ऐसा देश है जहां लोकतंत्र पूर्णरूप से सुरक्षित है क्योंकि यहां वोट की शक्ति द्वारा सत्ता परिवर्तन होता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सामने अनेक चुनौतियां हैं, पाकिस्तान निरन्तर सीमा पर आग बरसा रहा है। इससे हमारे सैनिक जवान हताहत हो रहे हैं। जब तक ठोस सैनिक कार्यवाही नहीं की जाएगी तब तक शान्ति स्थापित होने वाली नहीं है। देश में निरन्तर आवश्यक वस्तुओं के दाम बढ़ रहे हैं। आटा, चीनी, दालें, सब्जियाँ महंगी हो रही हैं। महंगाई को नियन्त्रण में लाना केन्द्र की भाजपा सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। अमीर वर्ग को तो कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता लेकिन मध्यमवर्गीय एवं निर्धन वर्ग द्वारा जीना दूभर हो रहा है। गैस, डीजल, पैट्रोल आदि के दामों पर नियन्त्रण रखना आवश्यक है। भारत के उत्तर-पूर्व में अलगाववादी शक्तियां सक्रिय हैं। इनकी शक्ति को कुचलना आवश्यक है। इसी प्रकार नगरों और महानगरों में चोर, ठग, लुटेरे और गुंडे सक्रिय हैं। इन पर नजर रखना आवश्यक है। हमारी माता, बेटी सब जगह सुरक्षित रहें, इसके लिए सरकार की अस्मिता दांव पर है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को बड़ी कुशलता से हर चुनौती का सामना करना है। वित्तमंत्री अरुण जेटली ने पहला संतुलित बजट प्रस्तुत करके आर्थिक कुचक्र को तोड़ने का काम किया है। अनेक नई जनकल्याणकारी योजनाएं प्रारम्भ की गई हैं। लघु एवं कुटीर उद्योगों को ऋण उपलब्ध करवाया गया है। विदेशियों को भारत में निदेश करने के लिए आमन्त्रित किया गया है। समय ही बताएगा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कितने सफल होंगे। **स्वतन्त्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।**

जल अमूल्य निधि है, इसका सोच-समझकर प्रयोग करें, क्योंकि जल है तो कल है।

thearyasamaj.org

❋ ओ३म् ❋

हम ऐसे वैसे न हों

वेद-मन्त्र

उपो षु शृणुही गिरो मघवन्मातथा इव।
कदा नः सूनृतावतः कर इदर्थयास इद्योजा न्विन्द्र ते हरी॥ 8॥ 416॥

जीव प्रभु से तीन प्रार्थनाएं करता है—(1) [उप उ]=समीपता से ही [सु]=उत्तम प्रकार से अच्छी तरह [गिरः]=हमारी वाणियों को [शृणुहि]=सुनिये। संसार में हम देखते हैं कि जो व्यक्ति बात ही करे और करे कुछ नहीं, तो फिर उसकी बात सुनने की इच्छा नहीं होती और साथ ही जो सम्बद्धता-सी बातें करें उसकी भी बात सुनने की तबियत नहीं होती। सो मंत्र में असाक्षात् रूप से यह प्रार्थना करते हैं कि ऐ प्रभो! हम केवल वाग्वीर न हों और ना ही असम्बद्ध बातें करने वाले हों ताकि हमारी प्रार्थनायें सुनी जायें। (2) दूसरी प्रार्थना यह है कि [मघवन्]=ऐ पापशून्य ऐश्वर्य वाले प्रभो! [मा अतथा इव]=हम भी ऐसे वैसे जीवन वाले न हों। हम वैसे ही बनने का प्रयत्न करें जैसे कि आप हैं, आपका अंश ही तो मुझे बनना चाहिये। "Afterty own image" आपकी प्रतिमूर्ति ही मैं बनूं। आपकी प्रतिमूर्ति बनता हुआ मैं भी प्रयत्न करूं कि मेरी कमाई पाप के लवलेश से रहित हो और मैं भी 'मघवा' बनूं। कोई भी व्यक्ति यह न कह पाये कि 'अरे वह तो ऐसा वैसा ही है'। मेरा जीवन निर्मर्याद न हो। (3) तीसरी बात जीव यह चाहता है कि—[कदा]=कब [नः]=हमें [इद्]=सचमुच [सूनृतावतः]=(सू+ऊन्+ऋत) उत्तम, दुःख परिहाण करने वाली, सत्य वाणी वाला [करः]=आप करेंगे। ऐ प्रभो! [इत् अर्थयासे]= आप मेरे से यही याचना किये जाते हैं। मैं कभी भी रुशतीं-जलाने वाली वाणी को न बोलूं, भद्रा वाणी ही मेरे मुख में निहित हो। मेरी वाणी दुःखी को सान्त्वना देकर उसके दुःख को कम करने वाली हो। मेरी वाणी कभी भी असत्य न हो।

जीव की इन तीन प्रार्थनाओं को सुनकर प्रभु कहते हैं कि ऐ [इन्द्र]=जितेन्द्रिय तू [नु]=अब [ते हरी]=अपने इन इन्द्रिय रूप घोड़ों को [योजा]=परहित के लिए इस शरीर रूप रथ में जोत। परहित तेरे जीवन का ध्येय बन जाय और तू लोकसंग्रह के लिए सदा कर्म में लगा रह। परहित में लगने से तेरी तीनों उल्लिखित इच्छायें अवश्य पूरी होंगी। और इस प्रकार परार्थ से तू स्वार्थ को सिद्ध कर रहा होगा। तेरी प्रार्थनायें अवश्य सुनी जायेंगी, तेरा जीवन व्यर्थ का न होगा, तेरी वाणी सारभूत होगी।

भावार्थ—हम परहित परायण होकर अपने जीवन को सुन्दर बनायें।

—आचार्य बलदेव

वृष्टि यज्ञ का आयोजन

वेदप्रचार मण्डल हिसार एवं आर्यसमाज मॉडल टाउन हिसार के संयुक्त तत्त्वावधान में 23 जुलाई से 27 जुलाई 2014 तक आर्यसमाज मॉडल टाउन के प्रांगण में एक क्विंटल गऊ के घृत से तथा बढिया सामग्री से वृष्टियज्ञ किया गया। प्रतिदिन 8 यजमान दम्पतियों ने श्रद्धा से आहुति डाली। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ० शिवदत्त पाण्डे (यू.पी.) थे तथा उनके साथ आये दो ब्रह्मचारियों ने मन्त्रपाठ किया।

पं. सूर्यदेव वेदांशु पुरोहित के प्रतिदिन शिक्षाप्रद भजन हुये। लोगों ने श्रद्धा से दान दिया। स्वामी सर्वदानन्द कुलपति गुरुकुल धीरणवास का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। महात्मा वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही ने राष्ट्ररक्षा एवं चरित्र निर्माण पर प्रकाश डाला। आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार ने मंच का संचालन किया तथा बीच-बीच में प्रेरणादायक उपदेश हुआ। दोनों संगठनों ने दिल खोलकर खर्च किया। 27 जुलाई को प्रभुकृपा से सायंकाल हिसार शहर में हल्की वर्षा भी हुई। लोगों में तथा कार्यकर्त्ताओं में खुशी की लहर दौड़ गई।

इस वृष्टियज्ञ में मॉडल टाउन के प्रधान श्री रामकुमार आर्य, महात्मा अत्तरसिंह स्नेही, सत्यप्रकाश मित्तल, ब्र. दीपकुमार आर्य तथा आर्यसमाज के चौ. गंगादत्त आर्य, सीताराम आर्य, ओमसिंह लाम्बा, पं. सूर्यदेव पुरोहित का यज्ञ को सफल करने में विशेष सहयोग रहा।

—कर्नल ओमप्रकाश आर्य, मन्त्री वेदप्रचार मण्डल, हिसार

एक स्मरणीय संस्मरण

❑ देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य, म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी

28 जून 2014 के 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक पत्र में मकड़ौली कलां जिला रोहतक के महाशय श्री बलवन्तसिंह आर्य के निधन की सूचना पढ़कर बहुत दुःख हुआ। यद्यपि महाशय जी ने 96 वर्ष की लम्बी आयु का उपभोग किया परन्तु घर-परिवार से एक सदस्य के चले जाने से उनकी कमी सदैव खलती रहती है। पूज्य स्वामी ओमानन्द जी के समकालीन आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता, एक दृढ़ स्तम्भ का गिर जाना आर्यजगत् को भारी क्षति हुई है। महाशय बलवन्त सिंह जी स्वामी ओमानन्द जी के अनन्य भक्त थे। वे स्वामी जी के हर कार्य और अभियान में सहयोगी बनकर उनके साथ खड़े दिखाई देते थे। महाशय जी घर से सम्पन्न थे तथा स्वामी जी उनसे बिना पूछे ही उनकी तरफ से आर्थिक सहयोग की घोषणा कर देते थे। स्वामी ओमानन्द जी के प्रति महाशय बलवन्त सिंह जी की अगाध श्रद्धा का सबसे बड़ा प्रत्यक्ष प्रमाण तो यही है कि उन्होंने अपने प्रिय पुत्र विजयपाल को स्वामी जी को भेंट कर ऋषि परम्परा को निभाया। वर्तमान में अखण्ड ब्रह्मचारी, महाबली, सौम्य, मृदु स्वभावी आचार्य विजयपाल अपने गुरु पूज्य स्वामी ओमानन्द जी के पदचिह्नों पर चलते हुए गुरुकुल और आर्यसमाज को नई दिशा प्रदान कर रहे हैं।

देशराज आर्य, रेवाड़ी

मेरा गुरुकुल झज्जर में आना-जाना 1971 में हुआ। महाशय बुद्धराम कन्हौरी वाले मेरे ससुर लगते थे तथा उनके साथ ही अक्सर महाशय बलवन्त सिंह जी, महाशय मांगेराम जी, श्री भण्डारी जी, श्री देवकरण जी वानप्रस्थी आदि से भेंट हो जाया करती थी। ये सभी मुझे पुत्रवत् मानते थे। इन्हीं सभी का आदर्श जीवन मुझे प्रेरित करता रहा है। महाशय बलवन्त सिंह जी के बड़े सुपुत्र श्री सत्यव्रत जी की शादी 29.6.1972 को खरमाण गांव के म० श्री मांगेराम जी की लड़की निर्मला से हुई थी मैं स्वयं उस शादी में महाशय बुद्धराम आर्य व उनकी लड़की सुखदा सहित उपस्थित था। आज से बयालिस वर्ष पूर्व बिना बारात, बिना बाजा, बिना सजधज, सामान्य रूप से 6-7 व्यक्ति अनौपचारिक रूप में बिना दुल्हन के गहनों व कपड़ों के दाज रहित श्री मांगेराम जी के घर पर उपस्थित हुए। दूल्हे और दुल्हन की सादे कपड़ों में ही वैदिक रीति से विवाह रस्म निभाई गई। मेरे पास चित्र लेने का कैमरा था। डरते हुए संकोच में ही कुछ चित्र लिए। परन्तु घर पर किसी बालक ने कैमरे को खोल दिया जिससे रील खराब हो गई। मुझे इस बात का आज भी पछतावा है।

महाशय बलवन्त सिंह जी ने कन्यादान के रूप में एक रुपया भी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने दुल्हन को ही दहेज समझ सभी औपचारिकताएं निभाई। परम्परा है कि घर पर बाहर से कोई आवे तो हलवा बनाया जाता है। वहाँ भी हलवा बना था, परन्तु महाशय जी ने हलवा नहीं खाया सामान्य भोजन ग्रहण किया। कहने लगे विशेष भोजन बनाना औपचारिकता है। उस वक्त विवाह स्थल पर स्वामी इन्द्रवेश जी, आचार्य विश्वपाल जी तथा इनके साथ दो महानुभाव और भी उपस्थित थे। रात्रि को गाँव में प्रचार मंडली के रूप में कार्यक्रम हुआ, स्वामी इन्द्रवेश जी व आचार्य विश्वपाल जी ने बिना दहेज की शादी पर विस्तार से प्रकाश डाला। महाशय बलवन्त सिंह जी ने भी स्वयं ग्रामवासियों को बिना दान-दहेज, बिना सजधज के सादे विवाह की परम्परा निभाने का आग्रह किया। महाशय बलवन्तसिंह जी कम बोलते थे, पर सारगर्भित बोलते थे। वेशभूषा सफेद धाती-कुर्ता तथा गले में जनेऊ सदैव दिखाई देता था। आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों की जीती जागती मिसाल थे। परन्तु धीरे-धीरे समय व्यतीत हो रहा है। बड़े-बड़े छायादार व फलदार वृक्ष गिरते जा रहे हैं। उनकी जगह अब नये वृक्ष पनप सकेंगे या नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता। ऐसे महान् व्यक्ति सदा प्रेरणा देते रहेंगे।

आवश्यक सूचना

दिनांक 24 अगस्त, 2014 को शहीद सुमेर सिंह जी के बलिदान दिवस पर गाँव नयाबांस (रोहतक) में निकट सांपला में प्रातः 9 बजे हवन, प्रवचन एवं ऋषिलंगर की सुन्दर व्यवस्था की गई है। आप सभी आर्य महानुभावों से अनुरोध है कि इस कार्यक्रम में आप सादर आमन्त्रित हैं। —प्रवीण आर्य 9999988152

earyasamaj.org

वैदिक धर्म व संस्कृति के स्तम्भ श्रावणी एवं योगेश्वर कृष्ण जन्माष्टमी पर्व

❑ मनमोहन कुमार आर्य

हमारे देश में चार प्रमुख पर्व मनाये जाते हैं जिनके नाम हैं श्रावणी, होली, दीपावली और दशहरा। हमारे देश-बन्धु संसार के प्रायः सभी देशों में बसे हुए हैं और वह भी अपने-अपने स्थानों पर इन पर्वों को श्रद्धा व हार्दिक भावना से मनाते हैं। इनमें श्रावणी पर्व ऐसा पर्व है जिसका नाम ही ईश्वरी ज्ञान वेदों से जुड़ा हुआ है। वेदों का श्रवण किये जाने से वेदों का एक नाम श्रुति पड़ा है। वर्षा काल में हमारे कृषि प्रधान देश में कृषकों तथा अन्य लोगों के पास अवकाश रहा करता है। वर्षा के कारण बाहर आने-जाने में असुविधा रहती है। ऐसे समय में यदि घर पर रहकर वेदों का स्वाध्याय या आस-पास जाकर विद्वानों से वेदों के अर्थों का श्रवण किया जाये और उन पर चिन्तन व मनन कर उनकी शिक्षाओं के अनुरूप जीवन को ढ़ाला जाये तो यह जीवन की उन्नति, अभ्युदय व निःश्रेयस, के लिए लाभदायक होता है। अतः प्राचीन काल से ही वेदों के सर्वाधिक महत्व होने के कारण वेदों के अध्ययन के पर्व को श्रावणी का नाम देकर इसके लिए उपयुक्त समय वर्षाकाल में श्रावण मास की पूर्णिमा को चुना गया। इसी दिन हमारे गुरूकुलों नये ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार करे उन्हें गुरूकुल में प्रविष्ट भी किया जाता है। हमारे पूर्वज वा ऋषियों के इस बुद्धि संगत निर्णयों के लिए हम उनके आभारी हैं। संसार में विभिन्न मत, मजहब व संस्कृतियों में जो पर्व मनाये जाते हैं उनमें से कहीं किसी में भी ज्ञानार्जन व तदनुसार आचरण को संवारने का श्रावणी जैसा कोई पर्व नहीं मनाया जाता। हम भारत के वैदिक धर्मी आर्य समाजी व महर्षि दयानन्द के अनुयायी लोग इस मामले में भाग्यशाली हैं कि हम वेदों के स्वाध्याय का पर्व श्रावणी के रूप में मनाते हैं और इस दिन कुछ नए संकल्प और व्रत धारण करते हैं।

श्रावण का महीना और इसकी पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला पर्व श्रावणी पर्व सर्वत्र प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय है। श्रावणी पर्व के आठवें दिन योगश्वर श्री कृष्ण का जन्मोत्सव पर्व कृष्ण जन्माष्मी के नाम से मनाने की परम्परा है। आर्य समाज की स्थापना के बाद व वेदों के ज्ञान के प्रकाश में आर्य समाज के विद्वानों द्वारा पौराणिकों व सनातनियों द्वारा मनायें जाने वाले सभी पर्व, व्रत व उपवासों की समीक्षा व मीमांसा की गई। आर्य समाज में व्रत व उपवास का वह रूप नहीं है जो हमारे पौराणिक व सनातनी भाईयों व बहिनों में है। व्रत का अर्थ होता है कि शुभ कार्य को करने का संकल्प धारण करना और उसे पूरा करने के लिए सभी उचित उपायों को करके उसे सफल करना होता है। किसी दिवस विशेष पर भोजन न करना "व्रत" या "उपवास" की श्रेणी में नहीं आता। व्रत का एक पयार्यवाची शब्द प्रतिज्ञा दिखाई देता है। प्रतिज्ञा कुछ वचनों से जुड़ी होती है। जो बात कह दी उसे पूरा करना होता है। प्रतिज्ञा को पूरा करने में चाहे कितनी ही कठिनाईयों का सामना क्यों न करना पड़े, तो भी सभी कठिनाईयों को सहन करना होता है परन्तु वचन भंग नहीं होने दिया जाता, यही व्रत व संकल्प का वास्तविक स्वरूप है। अतः आर्य समाज पौराणिक बन्धुओं की भांति भूखे रहने को व्रत की संज्ञा दिए जाने को स्वीकार नहीं करता। इस लिए आर्य समाज के अनुयायी पूर्वजों, महात्माओं, महापुरूषों के जन्म आदि से जुड़ी तिथियों के दिन व्रत आदि नहीं रखतें। उपवास भी पौराणिक मान्यताओं के अनुसार

मनमोहन कुमार आर्य

व्रत का ही पूरक है। पौराणिक मानते हैं उपवास वाले दिन को प्रातः एवं दिन में अन्न का भोजन नहीं करना। इसके स्थान पर वह जलीय पदार्थ चाय, जल, काफी, शीतल पेय, दूध, कूट्टू के आटे की रोटी, मावे के लड्डू व सभी प्रकार के फल आदि लेते या खाते हैं। उपावास का अर्थ ईश्वर के समीप रहना व स्वयं को ईश्वर के पास व उसके साथ अनुभव करना होता है। यह कार्य ईश्वर का ध्यान, चिन्तन, ओम् या गायत्री मन्त्र के जाप आदि से ही हो सकता है, निराहार रह कर नहीं। विचार करने पर पौराणिकों के व्रत व उपवास में कोई विज्ञान, तर्क, युक्ति, दर्शन, रहस्य आदि समझ में नहीं आते कि ऐसा करने से कैसे इष्ट की प्राप्ति होती है या हो सकती है। हमने यह भी पाया है कि पौराणिक व्रत व उपवास धन, सम्पत्ति, स्वास्थय, सन्तानों की शिक्षा, नौकरी, कारोबार में वृद्धि या सफलता व अन्य अनेक मनोरथों की पूर्ति व सिद्धि के लिए करते हैं। यह सब अल्पज्ञता, अन्धविश्वास व अज्ञानी गुरूओं की शिक्षा का परिणाम है। वह इसे आस्था कह सकते हैं परन्तु हमारी दृष्टि में यह सब आस्था नहीं अपितु अन्धविश्वास व अज्ञान ही है। जिस कार्य में सत्य न हो और उसे कोई करे तो उसे आस्था नहीं अन्धविश्वास कहना या अन्धी आस्था कहना ही उचित है। इसी प्रकार का कृत्य मूर्ति पूजा भी है जिसे आस्था न कहकर अज्ञानता व अन्धविश्वास कहना ही उपयुक्त व समीचीन है। हम यह समझते है कि ईश्वर विषयक आध्यात्मिक ज्ञान संसार में सबसे अधिक महत्वपूर्ण, उपयोगी, आवश्यक व पवित्रतम है और इससे जुड़ा हुआ होने से श्रावणी पर्व अन्य सभी पर्वों से सबसे अधिक महिमाशाली, महत्वपूर्ण व जीवनोद्देश्य को पूर्ण करने वाला है।

आइये अब विचार करें कि श्रावणी पर्व किन प्रयोजनों व उद्देश्यों से मनाया जाता है। श्रावणी पर्व श्रावण के महीने में पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला पर्व है। श्रवण शब्द से श्रावण का महीना बना है। श्रुति के अर्थ, वेद, उनका श्रवण, विचार, चिन्तन, मनन, स्वाध्याय, अध्ययन व प्रवचन आदि की परम्परा सृष्टि की आदि से हमारे देश में रही है। उसी को पर्व का रूप दिया गया है जिससे कि जो लोग अति व्यस्ताओं के कारण वेदों का नियमित स्वाध्याय व अध्ययन न कर पा रहे हों, वह इस श्रावण के महीने में अवश्य ही समय निकाल कर वेदों का स्वाध्याय करें, प्रवचन सुनें और वेदों का स्वयं भी प्रचार करें। इसी महत्व के कारण देश व विदेशों में सर्वत्र आर्य समाज द्वारा श्रावणी से जन्माष्टमी तक के 9 दिनों में अग्निहोत्र-यज्ञ, वेद पारायण यज्ञ, वैदिक भजनों व गीतों तथा वेद कथा व प्रवचन आदि का आयोजन किया जाता है। वेद कथा से तात्पर्य वेदों की मान्यताओं व सिद्धान्तों को समझाने के लिए प्रवचनों में सरल उदाहरणों द्वारा श्रोताओं को उन्हें समझाया, सिखाया व उनसे सहमत कराया जाता है। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द के वैदिक साहित्य के मूर्धन्य विद्वानों के प्रवचन सुनकर हम वेदों के स्वाध्याय की प्रेरणा ग्रहण कर उसे अपने जीवन में ढालने का व्रत लेते हैं।

हमारे पूर्वज बहुत बुद्धिमान थे। उनका प्रत्येक निर्णय व कार्य बहुत सोच-विचार कर युक्ति व विवेक पूर्ण होता था। उन्होंने चिन्तन किया कि वर्ष में 12 महीने होते हैं और 6 ऋतुओं में से शरद्, ग्रीष्म व वर्षा ऋतु मुख्य हैं। ग्रीष्म व शरद ऋतु में सभी प्रकार के कार्य किये जा सकते हैं परन्तु वर्षा ऋतु में सामान्य जीवन कुछ अस्त-व्यस्त सा रहता है। अतः वर्षा ऋतु में अवकाश का उपयोग धार्मिक साहित्य एवं वेदों के अध्ययन के लिए उपयुक्त होता है। श्रावण व भाद्रपद के महीनों में अधिक वर्षा होती है जिससे हमारे पूर्वजों ने इन दो महीनों के बीच के दिन श्रावण पूर्णिमा को श्रावणी पर्व के रूप में निर्धारित किया। इन दो महीनों में यदि हम अन्यान्य कार्यों से समय बचाकर उसे मुख्यतः स्वाध्याय, चिन्तन, मनन व ईश्वर के ध्यान आदि में लगाते हैं तो इससे हमारी आत्मा में ईश्वर का ज्ञान व उसका विश्वास वृद्धि को प्राप्त होगा जो हमें भावी जीवन में दुरित कार्यों व विचारों से बचा कर वर्तमान के हमारे जीवन एवं मृत्यु के पश्चात का जीवन को संवार सकता है। यहां हम देखते हैं कि जब अंग्रेजी संस्कारों वाले अपने युंवकों व युवतियों से परजन्म अर्थात् इस जीवन के पश्चात के पुनर्जन्म या जीवन की बात करते हैं और यह कहते हैं हमारा भावी जन्म हमारे इस जन्म के कर्मों के आधार पर ईश्वर निर्धारित करता है तो, इसके अदृष्ट होने कारण, किसी को इसका विश्वास नहीं होता। यदि हम उल्टा विचार करें तो सम्भवतः हमें समझ में आ सकता है। एक नये बच्चे ने जन्म लिया। बच्चे में छोटा सा शरीर पार्थिव पदार्थों मुख्यतः पृथिवी, अग्नि, जल, वायु व आकाश के संयोग

शेष पृष्ठ 5 पर....

thearyasamaj.org

वैदिक धर्म व संस्कृति के स्तम्भ.... पृष्ठ 4 का शेष....

से बना अन्नमय शरीर है तथा उसमें एक चेतन आत्मा है। वह चेतन आत्मा माता के शरीर में कब, कहां से व कैसे आया और सन्तान के शरीर से जुड़कर व उसमें प्रवेश कर उसकी उपस्थिति में शिशु का शरीर माता के गर्भ में विकसित हुआ, वह कैसे हुआ? हम देखते हैं कि बचपन में भी हमारा आत्मा वही होता और युवावस्था तथा वृद्धावस्था में भी वही रहता है। हमें बचपन की बहुत सी बाते याद रहती हैं जो इस बात का प्रमाण है कि बचपन वाली आत्मा ही आज भी हमारे अन्दर है और वही हम है। यदि यह भी शरीर की भांति संयोगजन्य व सावयव होती तो उसके नये पदार्थों के सेवन से बदल जाने से कुछ भी याद न रहता। इससे सिद्ध है कि शरीर में एक अविनाशी चेतन तत्व आत्मा है जो किसी अदृश्य सत्ता व व्यवस्था से हमारे शरीर में प्रवेश होती है और प्राकृतिक नियमों के अनुसार उसका जीवन चलता है। यह आत्मा कहां से आता है? इसके लिए हमें समाज व देश में प्रतिदिन मृत्यु को प्राप्त होने वाले लोगों पर ध्यान देना होगा। वह मरते क्यों हैं और मर कर कहां चले जाते हैं? इसका उत्तर है कि सर्वव्यापक ईश्वर मृतकों की आत्माओं को अपनी व्यवस्था व सामर्थ्य से शरीरों में से निकालता है और वहीं परमात्मा मृतक की गई उस व उन सब आत्माओं को भावी पिता के शरीर व उसके बाद उसे माता के शरीर में उसके पूर्व जन्म के प्रारब्ध व कर्मों के आधार पर स्थापित कर जन्म देता है। हमनें जो उत्तर दिया है वहीं एक मात्र उत्तर है जो तर्क संगत है। इससे अधिक सन्तोषप्रद और कोई उत्तर आज तक कोई दे ही नहीं पाया। हां, वितण्डा करने वाले अज्ञानी व स्वार्थी लोगों की कमी नहीं है। यह उत्तर हमारा अपना नहीं है अपितु वेदों की परम्परा व ऋषि परम्परा से प्राप्त उत्तर है जिसे अस्वीकार करने का कोई प्रश्न ही नहीं, जबकि हम इससे पूर्ण सन्तुष्ट व आश्वस्त हैं। इस जीवात्मा को इस मनुष्य जीवन में अच्छे कर्म कर, वेदों का ज्ञान प्राप्त करके, वेदानुसार जीवन व्यतीत कर, धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति करनी है। इसके लिए हमारे सामने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जीवन साक्षात उदाहरण है। हमें अन्य ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ नित्य प्रति स्वामी दयानन्द जी के पं. लेखराम, स्वामी सत्यानन्द, पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, मास्टर लक्ष्मण आर्य, श्री हरविलास शारदा आदि रचित जीवन चरितों को अध्ययन करना है व महर्षि के जीवन से प्रेरणा लेकर वैसा ही व्यवहार या अनुकरण करना है जिससे हमें मोक्ष प्राप्त होकर अनेक जन्मों से चली आ रही हमारी मोक्ष प्राप्ति की यात्रा को विराम व आश्रय मिल सके अन्यथा हमें भिन्न-भिन्न योनियों में कर्मानुसार जन्म धारण कर दुःख भोगने होगें। हमारे मित्रों के यह विचार व व्यवहार कि यह सब असत्य हैं, हमें उन भावी दुःखों व नाना प्राणियों की योनियों में जन्म लेने से बचा नहीं सकेगें। यहां यह कहना है कि 'काल करे सो आज कर, आज करे सो अब, पल में प्रलय होइगी, बहुरि करेगा कब?'

श्रावणी पर्व के दिन बृहद्यज्ञ का आयोजन अपने निजी परिवार में व सार्वजनिक स्थान आर्य समाज आदि में किया जाना चाहिये व किया भी जाता है, उसमें सबको सम्मिलित होकर धर्म लाभ प्राप्त करना चाहिये। यहां यह भी कहना है कि यज्ञ कर लेने मात्र से श्रावणी पर्व समाप्त नहीं हो जाता अपितु यह तो हर क्षण, हर दिन, प्रत्येक सप्ताह, माह व वर्ष भर ही नहीं सारा जीवन चलने वाला पर्व है। ऐसी भूल नहीं करनी चाहिये कि अब श्रावणी पर्व समाप्त हो गया और अब अगले वर्ष इसको यज्ञ व प्रवचन आदि के द्वारा मनाना है। अगले वर्ष जब यह दिवस आयेगा तो हमें परीक्षा व विचार कर देखना होगा कि हमने विगत वर्ष जो श्रावणी पर्व मनाया था, क्या उसके अनुसार स्वाध्याय, सन्ध्या, हवन व महर्षि दयानन्द के जीवन चरित और अन्य ग्रन्थों का नियमित स्वाध्याय व अध्ययन तथा उस पर आचरण जारी रखा है या नहीं? यदि कहीं कोई कमी रह गई हो तो उसे तब दूर करना, उसे अपनी डायरी में नोट करना और वर्ष भर उसे देखते रहना कि हमारा जीवन उसके अनुरूप व्यतीत हो रहा है या नहीं, आवश्यक है। श्रावणी पर्व के दिन बहनें अपने भाईयों की कलाई पर राखी बांधती है। कुछ लोग अपने पूर्व के यज्ञोपवीत उतार कर नये धारण करते हैं, इन दोनों परम्पराओं को जारी रखने से क्योंकि सिद्धान्त की कोई हानि नहीं है, अतः इसे मनाने व करने में कोई बाधा नही है।

श्रावणी के बाद आठवें दिन भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को हम लोग कृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाते हैं। इसको मनाये जाने का उद्देश्य है कि योगेश्वर श्री कृष्ण विश्व के इतिहास में कुछ अपूर्व महापुरूषों में से एक हैं। वह हमारे एवं सारे विश्व के मानवों के लिए प्रेरणा के स्रोत व सबके आदर्श हैं। उनका महाभारत के अनुसार, न कि पुराणों के अनुसार, जीवन चरित को पढ़ना, विद्वानों से उनके जीवन के प्रेरक प्रसंग सुनना व उन्हें अपने जीवन में चरितार्थ करना इसका इस पर्व को मनाने का उद्देश्य है। श्री कृष्ण जी योगी, युद्धास्त्र सुदर्शन चक्र धारी, वीर, साहसी, बलवान, पराक्रमी, देशभक्त, प्राणीमात्र के हितैषी, ईश्वरभक्त, वेदभक्त, ऋषिभक्त, सत्य के पोषक व रक्षक, गोभक्त, गोरक्षक, गोसंवर्धक, सत्याचारी, देशहित को सर्वोपरि मानने वाले, मर्यादाओं के पालक व देश काल परिस्थितियों के अनुसार यथोचित मर्यादाओं के जनक, दुष्टों का दमन करने वाले, अंहिसा के पुजारी, अनावश्यक हिंसा के विरोधी, वैदिक धर्म के अनुसार शासन करने वाले राजा तथा वैसा ही शासन व राज्य सारे देश में स्थापित करने का स्वप्न देखने वाले, कर्मठ, पुरूषार्थी, युद्धकला में प्रवीण, योद्धा, अन्यायकारियों के बल का नाश और उन्हें दण्ड देने वाले, सज्जन व धार्मिक लोगों का सम्मान करने वाले, महाबुद्धिमान, देवियों व स्त्री जाति का सम्मान करने वाले, स्त्रियों के रक्षक, शत्रु नाशक, महात्मा, माता-पिता, गुरूओं व विद्वानों के आज्ञाकारी, मित्रों के मित्र, वैदिक धर्मी, वेदानुयायी, सन्ध्या व अग्निहोत्र करने वाले महान पुरूष थे। उनके इन गुणों व इसी प्रकार के अन्य गुणों के साथ उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं का स्मरण कर उसे अपने जीवन में धारण करना चाहिये और उनकी स्मृति में वेदों के अनुसार महर्षि दयानन्द निर्दिष्ट पद्धति से यज्ञ भी करना चाहिये तभी इस पर्व को मनाने की सार्थकता है।

यहां यह भी स्पष्ट कर दें कि कृष्ण जी उपर्युक्त गुणों से युक्त एक महात्मा व महापुरूष थे परन्तु ईश्वर का अवतार कदापि नहीं थे और न ईश्वर का अवतार होता है या हो सकता है। संसार को बनाने व चलाने वाला ईश्वर तो अजन्मा व अमर है। यजुर्वेद में कहा गया है कि ईश्वर वह है जो नस-नाड़ी के बन्धन में कभी नहीं आता। वह सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, आप्तकाम, आनन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान व सर्वेश्वर है। इन शब्दों के यथार्थ अर्थों को समझना चाहिये और मूर्तिपूजा छोड़कर सर्वज्ञ ईश्वर का योग विधि से ध्यान करके समाधि का लाभ कर ईश्वर का साक्षात्कार करना ही जीवन के उद्देश्य की पूर्णता व सफलता है। नान्यः पन्था विद्यतेअयनायः।। ईश्वर को प्राप्त करने का अन्य कोई मार्ग है ही नहीं। सभी योगेश्वर कृष्ण जी के अनुयायियों को इस अवसर पर वृहत यज्ञ करके इसके दृष्ट व अदृष्ट फलों को प्राप्त कर जीवन को उन्नत करना चाहिये। हम अपने सुहृद सभी मित्रों को श्रावणी पर्व और योगेश्वर कृष्ण जी के जन्माष्टमी पर्व के अवसर अपनी हार्दिक शुभकामनायें देते हैं और सबके अच्छे स्वास्थ्य, सुख व समृद्धि की सर्वव्यापक, निराकार, सर्वेश्वर से मंगला प्रार्थना करते हैं।

स्वराज्य के साधनों को सिद्ध करें

❑ आचार्य अभय आर्य, रोहतक

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति ने अपने साहित्य में एक स्थान पर 'सद्धर्म प्रचारक' में लिखे स्वामी श्रद्धानन्द के एक लेख का उल्लेख किया है जिसमें स्वामी जी ने लिखा था कि कांग्रेस का मूलाधार अधर्म है, अतः कांग्रेस द्वारा स्थापित स्वराज्य कभी भी सुख-शान्ति नहीं ला सकता। उस समय स्वामी जी ने आर्यों से स्वराज्य के साधनों को सिद्ध करने का आह्वान किया था। आज भी स्वामी जी का वह अनुमान सार्थक है। इतने वर्ष के स्वराज्य के बाद भी देश में महिलाओं, बालकों, मूक पशुओं पर अत्याचार, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, चरित्रहीनता, अलगाववाद, उग्रवाद आदि बुराइयों ने विकराल रूप धारण करके राष्ट्र की सुख-शान्ति का हरण कर लिया है। हम स्वराज्य के साधनों को कहां तक सिद्ध कर पाए हैं इसका अनुमान इसी बात से होता है कि सी.बी.एस.ई. के विद्यालयों में 7 से 14 अगस्त तक संस्कृत सप्ताह मनाने का निर्देश केन्द्र सरकार द्वारा जारी किया गया तो एम.डी.एम.के. के महासचिव वाइको ने इसका यह कहकर विरोध किया कि यह देश की विविधता पर कुठाराघात है। वाइको को यह पता होना चाहिए कि एक माँ के यदि 5 बेटे हैं तो उनमें एकता इस कारण है कि वे एक ही माँ के बेटे हैं। इसी भांति संस्कृत सभी भाषाओं की माता है। अतः विविधता में एकता तभी रह सकती है जब हम संस्कृत के प्रति माता के समान श्रद्धा रखें। संस्कृति सम्बन्धी अन्य विषयों में भी ऐसा ही सोचना चाहिए। आर्यसमाज के लोगों की मानसिकता बदलने में तत्पर रहना चाहिए।

आवश्यक सूचना

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर दिनांक 16 से 18 अगस्त, 2014 को आर्यसमाज रामनगर रोहतक रोड जीन्द में भव्य जन्माष्टमी समारोह का आयोजन किया जा रहा है। आप सादर आमंत्रित हैं।

thearyasamaj.org

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर हिन्दू चेतना

श्रीकृष्ण मनोरंजन की वस्तु नहीं है, साहस और विवेक का नाम है श्रीकृष्ण

❑ महावीर 'धीर', 21/1227, प्रेमनगर, हैफेड रोड, रोहतक

हिन्दू समाज आज भी अज्ञान और अन्धविश्वास में जी रहा है। हमने अपने प्रत्येक महापुरुषों से सम्बन्धित दिन और पर्वों को खेल, मनोरंजन व पूजा-पाठ तक सीमित कर लिया है। हम पर्व या महापुरुषों के जीवन की वास्तविकता जानकर उसके अनुसार संकल्प लेकर जीवन व्यतीत नहीं करते, अपितु उनका नाम लेकर या पूजा करके यह समझते हैं कि ऐसा करने से हमारी मनोकामनाएं पूर्ण हो जायेंगी। ऐसे करके हम गीता में वर्णित कर्मफल व्यवस्था को ही नकार देते हैं। राजा-रंक, आस्तिक या नास्तिक सबकी सब मनोकामनाएं कभी भी पूर्ण नहीं होती तथा सभी की कुछ ना कुछ मनोकामनाएं बिना प्रार्थना व पूजा के भी स्वत: ही पूर्ण होती रहती हैं। यह सब कर्मानुसार निरन्तर होता रहता है, लेकिन अज्ञानी व्यक्ति कोई पूजा-पाठ करता है या तीर्थयात्रा करता है अथवा गुरुजनों के दर्शन करता है और उसकी कोई मनोकामना पूर्ण हो जाती है तो वह समझता है कि पूजा-पाठ, तीर्थयात्रा, गुरुदर्शन या उनके आशीर्वाद से ही यह पूर्ण हुई है।

इस प्रकार अज्ञान में फँसकर वह उन्हीं कार्यों में लगा रहता है तथा कर्म को श्रेष्ठ से श्रेष्ठ बनाने का अभ्यास छोड़ देता है। भगवान के रूप में कृष्ण, राम, शिव, हनुमान आदि अनेक देवी-देवताओं की स्तुति-पूजा चढ़ावा आदि उन्हें प्रसन्न करने के लिए ही करता है। शुभकर्म करने का संकल्प कभी नहीं करता। जैसे भगवान कोई अहंकारी व रिश्वतखोर अधिकारी है तो स्तुति गाने व कुछ चढ़ावे से प्रसन्न होकर कामना पूर्ण कर देगा। संसार के सकल, अनन्त पदार्थ बनाने वाले भगवान को हम दो चार फूल-पत्ते व पदार्थ चढ़ाकर रिझाना चाहते हैं? ये कितनी अज्ञानता है? हमें भले ही इससे कुछ संतुष्टि व शान्ति मिलती होगी लेकिन वह बिना संकल्पपूर्ण जीवन के कितनी क्षणभंगुर है। यह रोज-रोज की बातों से बिल्कुल स्पष्ट है। मध्यप्रदेश के इंदौर नगर में लोगों ने 'हिन्दी माता' का मन्दिर भी बना डाला और वहाँ 'हिन्दी माता' की मूर्ति की पूजा चल पड़ी, भला हिन्दी पढ़ने लिखने व प्रयोग की वस्तु है या पूजा करने की? स्वार्थी पण्डितों ने पूजा का अर्थ ही बिगाड़ दिया है। भाषा का उचित प्रयोग ही उसकी पूजा है। महापुरुषों के बताए मार्ग पर चलना ही उनकी पूजा है, न कि उनकी मूर्ति बनाकर उस पर कुछ चढ़ाना या खिलाने का दिखावा करना। स्मृति के लिए मूर्ति रखना गलत नहीं है, लेकिन मूर्ति को कुछ खिलाना और चढ़ाना प्रतीक रूप में भी घोर अज्ञान है। स्वार्थी पण्डित ही कभी मृत पति की चिता पर पत्नी को जलाने के मन्त्र वेदों में दिखाते थे। यज्ञों में युवक-युवती व पशुओं की आहुति देना भी वेदों में लिखा बतलाते थे। आज भी ऐसे पण्डित माता-बहनों को वेद पढ़ने और यज्ञ करने का अधिकार नहीं दे रहे हैं। इन्होंने 11 उपनिषदों के स्थान पर सैकड़ों नकली उपनिषदें बना डाली हैं। ये नये-नये घर के शास्त्र घड़ लेते हैं और अज्ञानी व दुखिया जनों को दोनों हाथों से लूट रहे हैं। लोग भी अजीब हैं। ये अज्ञानी लोग कोई भी वस्तु दूध, अन्न, दाल लेंगे तो परख कर लेंगे। स्कूल को परख कर बच्चे को प्रवेश करायेंगे। अच्छे शिक्षक से ट्यूशन लगवायेंगे। कहीं भी कुछ भी गड़बड़ लगेगी तो विरोध करेंगे। घोटालों और भ्रष्टाचार का विरोध करेंगे लेकिन आस्था और धर्म के नाम पर कुछ भी बता दो, उसे करने का तैयार रहते हैं। धर्म के भी कुछ नियम हैं, जिनसे धर्म परखा जाता है, ये उन्हें कभी नहीं जानना चाहते। इसलिए धर्म के नाम पर मन्दिर, आश्रमों और प्रवचनों में भ्रष्टाचार व महाघोटाले होते रहते हैं जिनके बारे में ये अज्ञानी भोले भाई कभी विरोध का स्वर नहीं निकालते।

भगवान् ने आपको बुद्धि दी है, पण्डितों, गुरुओं आदि की बातों को परख कर ग्रहण करो। वे भी मनुष्य हैं उन्होंने भी हमारी तरह ही किसी माता से जन्म लिया है उनसे भी गलती हो सकती है और गलतियाँ हो रही हैं। परख कर उनकी अच्छी बातें मान लो और गलत बातों को छोड़ दो। धर्म क नाम पर हो रहे घोटालों से बचो तथा दूसरे भाइयों को भी बचाओ। धर्म के नाम पर इस अधर्म को तुम्हें ही रोकना होगा और कोई रोकने नहीं आएगा। अपने और देश को बचाना चाहते हो तो सच्चे धर्म को पहचान कर उसे अपनाओ। यदि नहीं समझे तो धीरे-धीरे संसार से मिट जाओगे।

हमारा इतिहास बताता है कि जब-जब हमने कृष्ण, राम, शिव, हनुमान, दुर्गा, काली माँ आदि का भरोसा किया और करने योग्य काम नहीं किया तब-तब मार खाई। लुटे, पिटे, गुलाम हुए। लेकिन हमने दुष्टों के विरुद्ध शस्त्र उठाए और लड़े तब-तब हमारी विजय हुई। कृष्णलीलाएँ, रासलीलाएँ, रामलीलाएँ होती रही, मन्दिरों में घण्टे-घड़ियाल बजते रहे, पूजाएँ होती रही, लेकिन बिना कर्म किये न मन्दिर बचे, न हम बचे। आर्यान (ईरान), आर्याक (ईराक), आर्यमन (जर्मन), अपगण (अफगानिस्तान), पाकिस्तान, बंगला देश, ब्रह्मा (म्यांमार), कंबोडिया (कंबोज क्षेत्र), थाई देश सब हमारे से छिन गए। कश्मीर में मन्दिरों की घंटी बजते-बजते हमारे भाई-बहन अपमान पूर्वक वहां से भगा दिये गये। जगह-जगह गौएँ और गोरक्षक मारे जाते हैं, माता बहनों को तंग करके मारा जाता है, लेकिन कभी कोई शिव, हनुमान, दुर्गा माँ, वैष्णो माँ, राम व कृष्ण बचाने नहीं आये, क्योंकि हमने उनके बताए मार्ग व कर्म छोड़कर केवल उनकी पूजा को ही सब कुछ मान लिया फिर ऐसा तो होगा ही।

कृष्ण ने तो कभी सुदर्शन चक्र अपने से अलग नहीं किया। हमेशा दुष्टों का संहार किया। मुष्टि, चाणूर, जरासन्ध आदि सभी को पटक-पटक कर मारा। कर्ण, दुर्योधन, भीष्म, द्रोण, अश्वत्थामा आदि सबको कूटनीति से समाप्त किया। महाभारत के विश्वयुद्ध में विजय प्राप्त की, लेकिन ओ अज्ञानी बुजदिल हिन्दुओ! तुमने उसकी बाललीलाएँ तो याद रख ली लेकिन कायर और किन्नरों की तरह तुमने उसकी दुष्ट संहार की नीति बिल्कुल ही भुला दी। इसलिए तुम पर्वों पर मन्दिरों में नाचते हो लेकिन दुष्टों द्वारा मार खाने पर भी शस्त्र नहीं उठाते। नकली तीर-कमानों से नकली रावण को मारते हो। नकली श्रीकृष्ण को झुलाते हो और खुद भी नकली श्रीकृष्ण बन जाते हो। असली कृष्ण बनकर असली दुष्टों को मारने की हिम्मत तुम्हारे में नहीं रही। यदि होती तो अरबों की संख्या में होते हुए भी कुछ हजार कश्मीरी आतंकी तुम्हारे भाइयों को घर बार छोड़कर भागने के लिए विवश नहीं कर पाते। कश्मीरी शरणार्थी आज भी तुम्हारे बीचोबीच और आसे-पासे दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं और तुम बड़ी शान से आज भी मन्दिरों में नाच गा रहे हो। तुम अपने को वैदिकधर्मी मानते हो, लेकिन तुम्हारी किसी भी संस्था या मन्दिर में वेद नहीं पढ़े पढ़ाए जाते। दर्शन, उपनिषद् तुम कभी नहीं पढ़ते हो। अबूझ पुराणों और विभिन्न कथाओं में ही तुम्हारा दिल बहलता है। ऐसे ही दिल बहलाते रहे तो मिट जाओगे। सम्भलो! उठो! सोचो! कुछ खास करो! अन्धविश्वास से उभरो! सच्चा जीवन जीओ। स्वार्थमय भक्ति छोड़कर संकल्पपूर्ण भक्ति करो।

महर्षि पतञ्जलि कृत 'योगदर्शन' से बढ़कर धर्म, उपासना, ध्यान और भक्ति की कोई पुस्तक संसार में नहीं है। आज की प्रचलित पूजा-पद्धति इसमें कहीं नहीं लिखी है। इस महान् और छोटी पुस्तक में केवल 196 सूत्र हैं। यानी 100 पंक्तियों में ही गागर में सागर भरते हुए 'यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि' ये 8 पौड़ी भक्ति की लिखी हैं। एक पंक्ति में उसे बताएँ तो यही है कि ''सब प्रकार की बुराइयों को छोड़कर एकांत में प्रतिदिन प्रात: और सायं ओ३म् का जप करो। इसी से पूर्ण कल्याण और ईशप्राप्ति होगी।'' महान् देश के महान् भारतीय नागरिको! जान-बूझकर मूर्ख बने रहोगे तो दुनिया से तुम्हारा नामोनिशान शीघ्र ही मिट जाएगा। विनाश से पहले ही चेत जाओ। तुमने अपने सभी त्यौहार बिगाड़ लिए हैं। दीपावली पर तुम अरबों रुपये के पटाखे जलाकर प्रदूषण फैलाते हो। मरते हो, जलते हो और घायल होते हो। शिवरात्रि पर कावड़ लाते समय तुम शिव-पार्वती की शादी के द्विअर्थी अश्लील गीत कानफोडू डी.जे. पर भद्दे तरीके से नाच-नाचकर गाते हो। शिव को भांग का नशेड़ी बताते हो और खुद भी नशेड़ी बन जाते हो। क्या यही है हिन्दूधर्म की महानता? महान् वैदिक धर्म की महानता को तुच्छ मत बनाओ। स्वाभिमान के साथ सत्य धर्म को जानकर उसका पालन करो।

thearyasamaj.org

सिवानी बोलान (हिसार) में वृष्टियज्ञ सम्पन्न

ग्राम पंचायत सिवानी बोलान एवं आर्यसमाज सिवानी बोलान जिला हिसार के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 20.07.2014 को गाँव की चौपाल में देसी घी से वृष्टियज्ञ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य प्रमोद योगार्थी (दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार) थे। यज्ञ के व्यवस्थापक कैलाश कुमार शास्त्री व महात्मा अत्तरसिंह जी स्नेही का आशीर्वाद रहा। दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों जगदीश व नरोत्तम द्वारा वेदपाठ किया गया।

यज्ञ के यजमान मा० रत्नसिंह आर्य, ओमप्रकाश ढांढा, ओमकारमल सेठ ने सह दम्पत्ति सहित यजमान का स्थान ग्रहण किया। इस अवसर पर आचार्य प्रमोद जी ने वृष्टियज्ञ की महिमा पर प्रकाश डाला तथा स्नेही जी ने दो विधि और एक निधि पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर सरपंच प्रमील कुमार, मा० रत्नसिंह आर्य, राजेन्द्र सिहाग, अर्जुन सिंह वर्मा मीरपुर, श्रीमती प्रकाशो देवी, श्रीमती बीरमती, श्रीमती फूलादेवी, श्रीमती चन्द्रमती, पं० अमीचन्द शर्मा, टेकचन्द, अनिल कुमार आर्य, जगदीश आर्य, नरोत्तम आदि उपस्थित थे।

-राजेन्द्र सिहाग, सिवानी बोलान (हिसार)

दिल को चीनी से चार गुना खतरा

ज्यादा चीनी खाने से आपका दिल खतरे में पड़ सकता है। जयपुर स्थित संतेकबा दुर्लभजी मैमोरियल हॉस्पिटल के वरिष्ठ इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. संजीव गुप्ता ने एक शोध के हवाले से बताया कि ज्यादा चीनी लेने वाले में कम चीनी लेने वालों की तुलना में दिल के दौरे का खतरा चार गुना बढ़ जाता है। 40 हजार से अधिक लोगों पर किए गए इस शोध को जेएएमए इंटरनल मेडिसिन में प्रकाशित किया गया है।

शोध के नतीजे-चीनी युक्त सिर्फ आधा लीटर पेय पीने से ही दिल के दौरे का खतरा लगभग 30 प्रतिशत तक बढ़ जाता है। चीनी के इस्तेमाल से इंफ्लेमेशन (जलन) बढ़ती है जो कि हृदय रोगों की जड़ है। **इतनी हो मिठास**-अगर हम एक हफ्ते में सात या उससे अधिक बार ज्यादा चीनी वाला पेयपदार्थ पीते हैं तो हृदय रोगों का खतरा काफी बढ़ जाता है। दिनभर में हम दूध, चाय, जूस, शिकंजी या कोल्ड ड्रिंक के जरिए चीनी लेते रहते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार चीनी की यह मात्रा छह टी-स्पून से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। डायबिटीज की फैमिली हिस्ट्री होने पर चीनी का प्रयोग सावधानी से करें।

साभार-'आर्य-नीति'

सेवा में,

मानव संसाधन विकास मंत्री,
भारत सरकार, नई दिल्ली।

विषय : राष्ट्रभाषा हिन्दी की उपेक्षा।

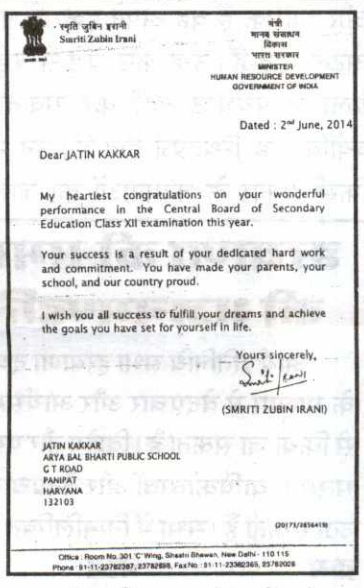

स्मृति जुबिन इरानी
Smriti Zubin Irani

मंत्री
मानव संसाधन विकास
भारत सरकार
MINISTER
HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
GOVERNMENT OF INDIA

Dated : 2nd June, 2014

Dear JATIN KAKKAR

My heartiest congratulations on your wonderful performance in the Central Board of Secondary Education Class XII examination this year.

Your success is a result of your dedicated hard work and commitment. You have made your parents, your school, and our country proud.

I wish you all success to fulfill your dreams and achieve the goals you have set for yourself in life.

Yours sincerely,

(SMRITI ZUBIN IRANI)

JATIN KAKKAR
ARYA BAL BHARTI PUBLIC SCHOOL
G T ROAD
PANIPAT
HARYANA
132103

Office : Room No. 301, 'C' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi - 110 115
Phone : 91-11-23782387, 23782899, Fax No : 91-11-23382365, 23782009

महोदया,

निवेदन है कि आपकी पार्टी की सरकार बनने पर मान्य राष्ट्रपति ने अभिभाषण में यह विश्वास राष्ट्र को दिलाया था कि यह सरकार हिन्दी व प्रान्तीय भाषाओं के प्रचार व प्रचलन के लिए प्रयत्नशील रहेगी परन्तु आपके व्यवहार से ऐसा क्रियात्मक नहीं लग रहा क्योंकि आपका मंत्रालय हिन्दी की घोर उपेक्षा कर रहा है। प्रमाण रूप में मैं इस पत्र के साथ आपके पत्र दिनांक 2 जून, 2014 की एक छाया प्रति संलग्न कर रहा हूँ।

यह पत्र आपके द्वारा पानीपत के एक विद्यालय के एक विद्यार्थी जतिन कुमार को उसके द्वारा बारहवीं कक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने पर बधाई देते हुए भेजा गया है। आपने यह अंग्रेजी में लिखवाया पर हिन्दी में क्यों नहीं लिखवाया, यह पूछने का अधिकार प्रत्येक भारतवासी को है।

अत: मुझे कृपया यह बताने की व्यवस्था करें कि अहिन्दी भाषी प्रान्तों के साथ ही नहीं, आप तो हिन्दी प्रान्तों के लोगों को भी अंग्रेजी में ही क्यों ही पसन्द कर रही हैं? क्या हिन्दीभाषी प्रजा ने हिन्दी में पत्र-व्यवहार करने से आपको रोका है?

उत्तर की, स्पष्टीकरण की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय—इन्द्रजित्देव, चूना भट्ठियां, सिटी सेंटर के निकट,
यमुनानगर-135001, दि० 27.07.2014

विचारों की उथल-पुथल के मध्य क्षणिक मौन

किसी एक समय, हमारे मन में केवल एक ही विचार होता है। हमारा अगला विचार क्या होगा, कोई नहीं जानता। परन्तु जब भी अगला विचार आता है उसका पिछले विचार से कोई न कोई सम्बन्ध अवश्य होता है। इस सम्बन्ध में कोई तर्क हो सकता है और नहीं भी। यह सम्बन्ध सीधा-सीधा भी हो सकता है अन्यथा भी। यह एक शब्द, लय (rhyme), एक घटना, एक दृश्य, पूर्वजन्मों के संस्कार आदि के रूप में हो सकता है। परन्तु यह तो सत्य है कि किसी भी एक समय, हमारे मन में केवल और केवल एक ही विचार उत्पन्न होता है।

जप या मन्त्र-साधना के द्वारा हम मन में उठने वाले विचारों की उथल-पुथल को रोक सकते हैं, उन्हें एक दिशा दे सकते हैं। जप क्या है? यह है एक ही शब्द या मन्त्र/श्लोक का बार-बार दोहराना। प्राय: हमें यह ज्ञात नहीं होता कि हमारा अगला विचार क्या होगा परन्तु जब हम जप कर रहे होते हैं तो हमें भलीभांति मालूम होता है कि हमारा अगला शब्द/विचार क्या होगा। जब हम निश्चय कर लेते हैं कि हम एक शब्द/मन्त्र का लम्बे समय के लिए जाप करेंगे तब हमें एक कला मिल जाती है, technique मिल जाता है अपने मन को केन्द्रित करने का, अनुशासित करने का। **अपने मन को दिशा देना या अनुशासित करना जप-विधि की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।** Mental discipline is one important achievement of 'Japa' as a technique. जप के द्वारा हम आकस्मिक विचारों से सुरक्षित हो जाते हैं, हमें अपने स्वरूप को जानने का एक मार्ग मिल जाता है, एक अवसर मिल जाता है।

यद्यपि मन में एक के बाद एक विचार उठते रहते हैं तथापि क्रमबद्ध दो विचारों के मध्य में एक अवकाश होता है जो हमें अपने स्वरूप से परिचित कराता है और वह परिचय है कि हम विचार नहीं अपितु दो विचारों के मध्य silence हैं, मौन हैं, शून्य हैं। इस बिन्दु पर पुन: चिन्तन करते हैं। विचार उत्पन्न होते हैं, समाप्त होते हैं। प्रत्येक विचार के पहले शान्ति है, मौन है और विचार के उपरान्त भी वही शान्ति। **तो फिर मैं क्या हूँ।** विचार के पहले भी मैं शान्ति हूँ, मौन हूँ, विचार के उपरान्त भी मैं शान्ति हूँ, मौन हूँ। इसलिए विचारों के होते हुए भी, **मैं मौन हूँ।** यही मेरी प्रकृति है, स्वभाव है, धर्म है। **जप के द्वारा ऐसी मानसिक स्थिति उत्पन्न हो जाती है, बाह्यवृत्ति रुक जाती है। जप की यह दूसरी उपलब्धि है।**

एक साधक सतत अभ्यास के द्वारा इस मौन की अवधि को बढ़ा अन्तर्मुखी हो जाता है, प्रभु का चिन्तन/ध्यान करने लगता है। मौन की अवधि को बढ़ाने का स्तम्भ वृत्ति प्राणायाम एक सुन्दर और सरल उपाय है। कुछ साधकों का भी यही निष्कर्ष है—**चले वाते चलं चित्तं, निश्चले निश्चलं भवेत्।**

परन्तु मन तो एक नटखट, चंचल बालक की तरह है। जब बालक को एक नया खिलौना दे दिया जाता है तो वह सब प्रकार की शरारतें छोड़ उसके साथ खेलने में मस्त हो जाता है। कुछ समय के उपरान्त, उस खिलौने से ऊब कर उसे फैंक देता है और फिर शरारतें करने लगता है। यही अवस्था हमारे मन की है। जब हम एक ही शब्द, मन्त्र या भजन की एक पंक्ति का जप करते रहते हैं तो ध्यान बिखरने लगता है और हम यन्त्रवत् ही जप करते रहते हैं। मन जप में नहीं रहता। मन को वापिस लाने का एक सरल उपाय है मन को जाप के लिए नया शब्द/मन्त्र दे देवें। प्रभु के अनन्त गुण-कर्म-स्वभाव हैं। अपनी-अपनी एकाग्रता के अनुसार अपनी ही सहज भावना से अपने ही शब्दों में किसी एक गुण, कर्म, स्वभाव का अर्थ सहित चिन्तन करें जैसे—ओ३म्.... ओ३म्.... ओ३म्.... जब मन भागने लगे तो ओ३म् आनन्दम्, ओ३म् आनन्दम्, पर मन की सुई को टिका दें। इसी प्रकार ओ३म् निराकार..., ओ३म् निराकार... ओ३म् सर्वशक्तिमान्, ओ३म् सर्वशक्तिमान्... आदि-आदि। कहाँ तक भागेगा यह मन।

ईश्वर हम पर कृपा करे। हम विवेक, वैराग्य और अभ्यास के द्वारा मोक्ष के पथ पर अग्रसर हों।

—रमेशचन्द्र पहूजा, प्रधान,
आर्यसमाज मॉडल टाउन, यमुनानगर

आर्यसमाज मन्दिर अशोक नगर, नई दिल्ली का निर्वाचन

प्रधान-श्री चतुर्भुज अरोड़ा 9312372216 मन्त्री-श्री प्रकाशचन्द आर्य 9212175772, कोषाध्यक्ष-श्री ओमप्रकाश चावला 9818143113

thearyasamaj.org

कैंची की तरह काटना नहीं, सुई की तरह सीना सीखो

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं—1. जिनके जीवन से सुगन्ध निकलती है, यह उनके पुण्य कर्मों की कीर्ति है। वह इस समाज में सुई की तरह परिवारों को, समाज को सीने का कार्य करते हैं। 2. जिनके जीवन से दुर्गन्ध निकलती है, यह उनके पाप के फल हैं। उनका स्वभाव कैंची की तरह काटना होता है। वह मूर्ख लोग उठते-बैठते, चलते-फिरते दूसरों के दोष देखते रहते हैं और उन दोषों के आधार पर कैंची का स्वभाव बनाते हुए दूसरों को काटते रहते हैं। परिवारों में समाज के विखण्डन में आनन्द लेते हैं, क्योंकि वे इस विश्व की कामनाओं के जाल में फँसे रहते हैं। ऐसा व्यक्ति केवल अपने स्वार्थ की चिन्ता करता है दूसरों को हानि पहुंचाने में निन्दा करने में आनन्द का अनुभव करता है। वह थोड़ा-सा दु:ख आने पर अपने आपको संसार का सबसे बड़ा दु:खी व्यक्ति समझने लगता है। जरा-सा सुख आने पर इतना उछलता है कि उसे अपने समान कोई सुख नहीं लगता। वह अहंकार में लिप्त हो जाता है। ऐसा व्यक्ति स्थितप्रज्ञ नहीं होता। उसका स्वभाव सुई की तरह दिलों को जोड़ने में नहीं, कैंची की तरह दिलों को तोड़ने, दुखाने में लगा रहता है। परन्तु वह मूर्ख व्यक्ति यह नहीं जानता दर्जी सुई को सदा टोपी पर या कमीज की जेब पर लगाता है और कैंची सदा दर्जी के पास पड़ी रहती है। जोड़ने वालों का सदा सम्मान होता है तोड़ने और काटने वाले कुछ समय के लिए चाहे अपने मन में खुश हो लें, परन्तु अन्तत: उन्हें अपमानित होना पड़ता है। अत: बन्धुओ! कैंची की तरह काटना नहीं सुई की तरह सीना सीखो।

भगवान् को पाना कठिन नहीं है। एक तरफ से हटाओ, अपने आपको दूसरी जगह से जोड़ दो। पर ध्यान रखना एक तरफ से सावधानी से उखाड़ना होगा। ऐसा न हो कि जड़ तो वहीं रह जाये और पौधा बाहर, तो न इधर के रहोगे न उधर के। संसार की मिट्टी से उखड़कर स्वर्ग की मिट्टी में अपने आपको जोड़ना है बहुत संभल कर जोड़ना होगा। बुल्लेशाह से किसी ने पूछा, "भगवान् को पाने के लिए क्या करना चाहिए?" तो बुल्लेशाह ने कहा, "बुल्लेया, रब दा की पावंड़ा- ऐथों उठाणां, उथों लांवड़ा"। जैसे पौधे को माली उखाड़ता है और दूसरी तरफ जाकर लगा देता है ऐसे ही मन को तुम इस संसार से हटाओ और परमात्मा में जोड़ दो, परमात्मा मिल जाएगा। कितना सरल रास्ता बनाया परन्तु इसके लिए आवश्यक है योगी को आत्म-प्रशंसा से दूर रहना होगा। जब योगी विभूतियां प्राप्त कर लेता है तो संसार के लोग उनकी प्रशंसा करने लगते हैं, उनके मान-सम्मान में पलकें बिछाने लगते हैं, उन्हें महाराजाधिराज, 1008 और न जाने किन-किन पदवियों से अलंकृत करने लगते हैं। यदि योगी इसमें फँस गया तो उसका पतन निश्चित है। वह पुन: उसी लोक में चला जायेगा। इसलिए योगी को इस प्रशंसाओं से मुक्त होना होगा। वह इन चिकनी चुपड़ी बातों को अनसुना कर दें, सुख-दु:ख में एक-सा रहें अपने 'मैं' से प्रभावित न हों, तभी यह योगी कैवल्य की ओर बढ़ सकता है।

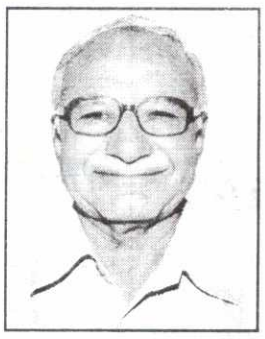

कन्हैयालाल जी आर्य

जीवन की ऊँचाइयां प्राप्त करने के लिए हमें इस साधना से गुजरना चाहिए। हमें ऊँचाइयों पर चढ़ते-चढ़ते प्रतिदिन अपने आपको टटोलना चाहिए कि मुझे अहंकार तो नहीं हो गया। अपना परीक्षण प्रतिदिन करो यह निश्चित करो कि मैंने अपनी 'मैं' का कितनी बार प्रयोग किया। मैं ध्यान रखूं कि कल मेरी 'मैं' समाप्त होनी चाहिए। धीरे-धीरे अभ्यास से 'मैं' समाप्त होती चली जायेगी और 'मैं' के स्थान पर 'तू' आती जायेगी। यही सच्ची समाधि है।

बच्चों की तरह बनकर रहोगे तो सुख पाओगे

बच्चा पैदा होता है तो वह परमात्मा का सन्देश लेकर आता है कि ऐ दुनिया के लोगो! तुम प्यार भी करते हो, घृणा भी करते हो। परन्तु प्यार बांटना सीखो, घृणा नहीं। देखो! हम दो बच्चे आपस में आज लड़ रहे हैं, उसी समय हमारी मातायें आ गईं। उन्होंने अपने-अपने बच्चे का पक्ष लेते हुए आपस में दुश्मनी पाल ली। परन्तु हमने दूसरे दिन एक-दूसरे को क्षमा करते हुए फिर इकट्ठे खेलना शुरू कर दिया है। इसी प्रकार तुम भी हमारी तरह बच्चे बनकर देखो एक दूसरे के साथ शत्रुता पालने की बजाय, भूलना सीखो। मित्रता करना सीखो, तभी यह संसार दु:खों के सागर के स्थान पर सुखों एवं अमृत का झरना बन जायेगा।

पुण्यकर्म करने के लिए साहस की आवश्यकता होती है। जो सच्चे और धार्मिक हैं वह अपने इकरारों पर अटल रहते हैं। उन्हें कोई बड़े से बड़ा प्रलोभन पथभ्रष्ट नहीं कर सकता, क्योंकि वह स्थितप्रज्ञ होते हैं। उन में किसी प्रकार के कामनाओं का जाल नहीं होता। वह ज्ञानी बनकर एक संन्यासी, एक सन्त का जीवन जीने वाला हो जाता है। भले ही वह किसी वेश में रहे, किसी भेष में रहे, किसी परिवेश में रहे, किसी भी स्थिति और परिस्थिति में रहे, वह अन्दर से जागृत होता है।

ऐसे व्यक्तियों के सम्बन्ध में अर्जुन श्रीकृष्ण से पूछता है, "वह स्थितप्रज्ञ व्यक्ति किस भाषा में बोलता है? उसका व्यवहार कैसे होता है?" तब अर्जुन की जिज्ञासा को शान्त करते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं कि ऐसे स्थितप्रज्ञ व्यक्ति की वाणी और शब्दावली अपने में अनोखी होती है। ऐसा व्यक्ति अपने में केन्द्रित न होकर समष्टि का अंग बन जाता है। वह कामना रहित सम्राट बन जाता है। उसका मन अन्दर से सन्तुष्ट होता है। वह इतना समृद्ध हो जाता है कि बाहर की धन-दौलत और समृद्धि उसके सम्मुख नगण्य हो जाती है। वह एक ऐसे आनन्द से परपूर्ण हो जाता है जिसका कोई अन्त नहीं है। अत: आत्म-प्रशंसा से दूर हटते हुए बच्चों की तरह सरल, सुई की तरह समाज को जोड़ते हुए, एक घर को छोड़ते हुए दूसरे घर में प्रवेश करते हुए, पिछले घर का मोह न करते हुए और अगले में आसक्ति न करें, तभी हमारा कल्याण होगा। अत: सुई की तरह सीना सीखें, कैंची की तरह काटना नहीं। यही जीवन का उद्देश्य होना चाहिए।

हरयाणा की समस्त आर्यसमाजें सभा की भजनमण्डलियों का लाभ उठावें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक सभा की भजनमण्डलियों के माध्यम से वेदप्रचार और आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार का कार्य उत्तम ढंग से किया जा सकता है। विशेष तौर पर हरयाणा की आर्यसमाजें अपने साप्ताहिक सत्संगों, वार्षिकोत्सवों और वेदप्रचार सप्ताह में इसका बहुत अच्छे ढंग से लाभ उठा सकती हैं। सभा में निम्नलिखित भजनमण्डलियां प्रचार कार्य कर रही हैं—

क्रम	नाम		मोबाइल नं०
1.	श्री सहदेव सरस भजनोपदेशक	—	09582142371
2.	श्री सत्यपाल आर्य भजनोपदेशक	—	9354824574
3.	श्री महेन्द्र आर्य भजनोपदेशक	—	9416344174
4.	श्री जसविन्द्र आर्य भजनोपदेशक	—	9991273589
5.	श्री चतरसिंह आर्य भजनोपदेशक	—	9812380029
6.	श्री रामेश्वर आर्य भजनोपदेशक	—	9416955090
7.	श्री स्वामी देवानन्द भजनोपदेशक	—	08800412687

आर्यसमाजें अपने वार्षिकोत्सव, वेदप्रचार सप्ताह तथा विशेष अवसर पर आयोजित समारोह में अवश्य आमन्त्रित करके वेदप्रचार को बढ़ाने में सहयोग प्रदान करें।

—रामपाल आर्य, सभामंत्री

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222, 7206865945 पर सूचना दें। धन्यवाद।

—व्यवस्थापक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।